B.A.(Education),part-1,paper-ll,
Presented by Dr.Pallavi,
Topic- मुस्लिम शिक्षण संस्थान के प्रकार (Types of Educational Institutions of Muslim Education)

मुस्लिम काल में निम्न प्रकार की शिक्षा संस्थाएँ थीं -
1. मकतब–'मकतब' शब्द की उत्पत्ति अरबी के 'कुतुब' शब्द से हुई है जिसका अर्थ 'उसने लिखा' । इस प्रकार ,मकतब वह स्थान है जहाँ बालकों को पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है। मकतब में प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान की जाती थी। प्रायः मकतब में एक शिक्षक होता था। साधारणतः मकतब किसी मस्जिद से सम्बद्ध होते थे । कहीं-कहीं मौलवी व्यक्तिगत रूप से अपने घरों पर या अन्य सुविधाजनक स्थानों पर मकतब चलाते थे।

कई स्थानों पर मकतबों में हिन्दू बालक भी शिक्षा प्राप्त करते थे। प्रायः हर गाँव में एक मकतब अवश्य होता था।

2. खानकाहें- 'खानकाह' में केवल मुस्लिम छात्र ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।

3. दरगाह - दरगाहों में भी मुस्लिम छात्र ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।

4. कुरान-स्कूल- कुरान स्कूल साधारणतः मस्जिदों से जुड़े होते थे । इनमें केवत कुरान शरीफ की हो शिक्षा प्रदान की जाती थी। छात्रों को पहले अरबी लिपि का ज्ञान कराया जाता था। इसके पश्चात् कुरान की आयते रटायी जाती धीं। यहाँ पर लिखने तथा गणित की शिक्षा को को छावस्था नहीं धीं ।

5. फ़ारसी स्कूल-मुस्लिम शासन में, फ़ारसी राजभाषा थी। शासन में विभिन्न पदों काम करने के लिए इस भाषा को जानना आवश्यक था। इस मांग को पूरा करने के लिए फ़ारसी के स्कूलों की स्थापना की गई थी।

6. फ़ारसी तथा कुरान के स्कूल-इन स्कूलों में फ़ारसी तथा कुरान दोनों की शिक्षा दी जाती थी।

7. अरबी के स्कूल–अरबी स्कूलों का प्रमुख उद्देश्य अरबी भाषा में प्रवीण विद्वानों का निर्माण करना था। इनका उच्च स्तर था।

8, मदरसे-'मदरसे' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द 'दरस' से हुई थी। जिसका अर्थ है 'भाषण' । इस कारण मदरसा वह स्थान है जहाँ पर भाषण या व्याख्यान विधि का प्रयोग किया जाता है।

5.7 प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था (Organisation of Primary Education)

1. प्राथमिक शिक्षा संस्थाएँ पाँच प्रकार की घी- (i) मकतब, (ii) खानकाहाँ से जुड़े स्कूल, (iii) दरगाहों से जुड़े स्कूल, (iv) मौलबियों के घरों में शिक्षा, (४) नवाबों तथा अन्य शासकों के बच्चों को घर पर दी जानेवाली शिक्षा ।

2. प्रवेश विधि-प्रारम्भिक शिक्षा का आरम्भ बिस्मिल्लाह की रस्म के बाद होता था। यह रस्म बालक के चार वर्ष, चार माह तथा चार दिन को उम्र होने पर की जाती थी। इस अवसर पर बालक को शुभकामनाएँ देने के लिए परिवार के सभी लोग तथा सभी संबंधी उपस्थित रहते थे और मौलवी के द्वारा कुरान की आयतें पढ़ी जाती थी और बालक उन्हें दोहराता था। सभी प्राथमिक स्कूलों के पाठ्यक्रम एक जैसे नहीं थे। साधारणत: पढ़ने, लिखने और गणित की शिक्षा दी जाती थी। बालकों को कुरान को आयतों को कंठस्थ कराया जाता था। जब बालक को पढ़ने-लिखने का पर्याप्त ज्ञान हो जाता था तब उन्हें व्याकरण तथा फारसी भाषा की शिक्षा दी जाती थी।

3. मुख्य पुस्तकें-चरित्र निर्माण के लिए बालकों को बोस्तों तथा गुलिस्तों पढ़ाई जाती थी। ऊँची आवाज में बच्चों को पहाड़े सिखाये जाते थे।

4. लिखना-सुन्दर लिखाई पर बहुत जोड़ दिया जाता था। लिखने के लिए लकड़ो के तख्ते का प्रयोग किया जाता था। मकतब में बालक तख्ते को काले रंग से रंग कर लाया करते थे और इसे बहुत संभाल कर रखा करते थे।

5. अन्य व्यवस्था-शिक्षण विधि मौखिक थी। पाठ को कंठस्थ करने पर जोर दिया जाता था। प्रायः छात्र कहीं छाया के कतार में बैठकर पढ़ते थे। मौलवी के लिए एक चटाई होती थी इन सभी बातों का प्रबंध मौलवी के हाथों में था।

5.8 उच्च शिक्षा व्यवस्था (Organisation of Higher Education)

बड़े-बड़े नगरों में उच्च शिक्षा का प्रबंध था । उच्च शिक्षा मदरसों में दो जातो थो। इनमें आगरा, अजमेर, लाहौर, मुल्तान, सियालकोट, लखनऊ, जौनपुर तथा मुर्शिदाबाद आदि के मदरसे ख्याति प्राप्त थे। वह अध्ययन के लिए अफगानिस्तान, बुखारा आदि स्थानों से लोग आते थे।

पाठ्यक्रम --अबुल फजल (1551-1602 ई०) जो अकबर के प्रसिद्ध नवरत्नों में थे - आइन- ए- अकबरी में उच्च शिक्षा में पाठ्यक्रम का विवरण विस्तार से दिया है। उच्च शिक्षा को अवधि 10- 12 वर्ष थी। इसमें धार्मिक तथा लौकिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी।'

धार्मिक पाठ्यक्रम के विषय—इसमें कुरान की आयतों को कंठस्थ कराया जाता था और उसकी सूक्ष्म विवेचना की जाती थी। इसके अतिरिक्त इस्लामी इतिहास, सूफी इतिहास, इस्लामी कानून, इस्लामी परम्परा का अध्ययन कराया जाता था ।

लौकिक पाठ्यक्रम के विषय-- पाठ्यक्रम विस्तृत था । इसके अंतर्गत (i) अरबी तथा फारसी भाषणों का इतिहास तथा व्याकरण, (ii) कृषि (iii) गणित, (iv) भूगोल, (v) ज्योतिष, (vi) अर्थशास्त्र, (vi) नीतिशास्त्र, (vii) दर्शनशास्त्र, (ix) यूनानी चिकित्सा, (x) शासन के सिद्धान्त, (xi) कुछ गणित के अंश और (xii) संगीत कक्षा अनुसार इसका अध्ययन कराया जाता था। सभी मदरसों में उपर्युक्त सभी विषय नहीं पढाये जाते थे। अधिकतर मदरसों का माध्यम फारसी था। कुछ हो ऐसे मदरसे थे जहाँ अरबी भाषा शिक्षा का माध्यम थी। मूल्यांकन अध्यापक द्वारा ही किया जाता था। तोन प्रकार की डिग्रियाँ दो जाती थों ,जिन्हें सनदें कहा जाता था- (i) फाजिल (Fazil). (ii) आलिम (Afim), (i) अविल (Abil) यह शिक्षा निःशुल्क थी।

5.9 व्यावसायिक शिक्षा व्यवस्था (organisation of Vocational Education)

व्यावसायिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता था इसके अलावा चिकित्सा शिक्षा में यूनानी चिकित्सा व्यवस्था की पढ़ाई का प्रबंध था। कुछ मदरसों में हस्तकलाओं की शिक्षा और ललित कलाओं की शिक्षा की भी व्यवस्था की गई थी टी० एन० सिक्योरा ने 'The Educa son of India' में लिखा है, "स्त्रियों को शिक्षा पढ़ने और लिखने के न्यूनतम तत्त्वों तक सौमित रह गयी थी। डॉ० एफ० ई० कोई ने Education in Ancient and Later Times" में लिखा है कि "मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी प्रणाली थी जिसका भारत में प्रतिरोपण किया गया और ब्राह्मणीय शिक्षा से बहुत ही कम संबंध रखकर नई भूमि में विकसित हुई।"

5.10 मुस्लिम कालीन शिक्षा की समीक्षा (Review of Muslim Education)

शिक्षा के गुण- 1. मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था में अलौकिक एवं लौकिक शिक्षा का समन्वय था। 2. शिक्षा ग्रहण करमा पवित्र कार्य समझा जाता था ।

3. शिक्षा में व्यावहारिकता थी।

4. शिक्षा में शिष्य तथा अध्यापक का व्यक्तित्व सम्पर्क था।

5. अनेक शासक तथा धनी शिक्षा के प्रावधान के लिए सहायता देते थे। प्रायः मकतबों तथा मदरसों के व्यय के लिए जागीरें सम्बद्ध कर दी गया था।

6. प्रायः हर प्रकार को शिक्षा निःशुल्क थी।

7. प्राय: छात्रों के भोजन तथा रहने की निशुल्क व्यवस्था धी।

8: शिक्षा के प्रसार के लिए छात्रों को छात्रवृत्ति दो जाती थीं।
9. लगभग सभी शिक्षा के केन्द्र नगरों के कोलाहल मय वातावरण से दूर शान्त तथा सुरम्य स्थाना पर स्थापित किये गये में।

शिक्षा के दोष- । डॉ० युसूफ हुसैन ने अपनी पुस्तक 'Glimpses of Medieval Indian Culture' में लिखा है कि मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था, नेतृत्व विकास में असफल रही। अत: या जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए असाधारण व्यक्तियों की मांग को पूर्ति न कर सको । ।he Education of India पुस्तक के लेखक । N. Square (टी० एन० सिंकारा) मे लिखा है, "स्त्रियों को शिक्षा पदने और लिखने को न्यूनतम आवश्यकता तक सीमित थी।"

डाट एफ0 ई0 की (FE. Keay) ने अपनी पुस्तक Education in Ancient and later times लिखा है "मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी प्रणाली थी जिसका भारत में प्रतिरोपण किया गया और जो ब्राह्मणीय शिमला में ही का संबं रखकर, नयो भूमि में विकसित हुई ।

मुस्लिम शिक्षा के मुख्य दोष--

(i) मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया गया।

(ii) धार्मिक विषयों पर आवश्यकता से अधिक बल ।

(iii) समझने से अधिक रटने पर बल ।

(1v) स्त्री शिक्षा की अवहेलना किया ।

(v) प्रान्तीय भाषाओं की उपेक्षा ।

(vi) हिन्दुओं की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाना।

(vii) धार्मिक रीति-रिवाजों पर अधिक बल और आध्यात्मिक शिक्षा की उपेक्षा।

(viii) शिक्षा प्राय: नगरों तक सीमित रही, विशेष कर उच्च शिक्षा ।

(ix) जनसाधारण की शिक्षा में शासकों को पर्याप्त रुचि नहीं।

(x) मौखिक शिक्षण की प्रधानता ।

(xi) शिक्षा में लचीलेपन का अभाव ।

(xii) कठोर दंड को व्यवस्था ।

मध्यकालीन शिक्षा के बारे में प्रायः यह कहा जाता है कि मुस्लिम शिक्षा सभी मुसलमानों को एक सूत्र में बाँधने में सफल हुई और इसके बल पर दूसरे देश से भी आकर वे अपनी पहचान बनाये रखें।